Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 6 | JUNE 2024

सहरिया जनजातियों की सामाजिक आर्थिक संरचना एवं विकास का समाजशास्त्रीय अध्ययन (राजस्थान के विशेष परिपेक्ष्य में)

पंकज सिंह [1]

[1] **पोस्ट गेस्ट फैकल्टी असिस्टेंट प्रोफेसर गवर्नमेंट कॉलेज बागोड़ा, राजस्थान.**

ABSTRACT:

यह जड़ जंगम सृष्टि चारों ओर अनेक प्रकार के प्राकृतिक तत्व एवं प्राणियों से शोभित है। जहाँ संपूर्ण मानव सभ्यता अपना जीवन यापन करती है। परमात्मा की सृष्टि में मानव संस्कृति अलग अलग स्थलों पर अलग अलग प्रकार की है। कहीं शहरी क्षेत्र हैं तो कहीं ग्रामीण इलाके तो कहीं मात्र आदिम जनजाति। लेकिन सभी का अपने जीवन को जीने का तरीका स्वरूप एवं रीति-रिवाज बिल्कुल अलग अलग है। विभिन्न आदिम जनजातियों अपनी अलग अलग विशिष्टताओं के साथ अलग अलग स्थलों पर निवास करती है जिनमें राजस्थान राज्य की एक आदिम जनजाति है सहरिया। जो बारां जिले के किशनगंज तथा शाहबाद पंचायत समितियों में निवास करती है। ऐसा स्वीकार किया गया है कि सहरिया शब्द शहर अथवा वीराना से उत्पन्न हुआ है। परम्परागत रूप से सहरिया जनजाति के लोग किशनगंज तथा शाहबाद के दुर्गम तथा दूरस्थ वन तथा पहाडी क्षेत्रों में रहते आये है तथा राज्य एवं केन्द्र सरकार के सहयोग से निरन्तर इस जनजाति के लोगों का विकास करने के लिये विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रयास किये गये है। सरकारी प्रयासों के साथ-साथ इस जनजाति के विकास कल्याण के लिये इन क्षेत्रों में गैर सरकारी संस्थायें तथा सामाजिक संगठन भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहे है। जो राजकीय तथा गैर राजकीय फण्ड के माध्यम से विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन कर रहे है। एक अनुमान के अनुसार दोनों खण्डों में सहरिया जनसंख्या लगभग 80000 है। सागाजिक संरचना में गोत्रों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सहरिया जनजाति के लोगों के प्रमुख गोत्रों में- गोचारियां चूडावत, पगडियां, सोमरियां, बरलियया, देवरिया, पवार आदि है। सहरिया जनजाति में एकाकी परिवार प्रमुखता से पाये जाते है। इन परिवारों में पति पत्नि तथा उनके अविवाहित बच्चे पाये गये हैं।

सहरिया जनजाति के लोग हिन्दू देवी देवताओं को भी मानते हैं। इनके अतिरिक्त इनके देवता भगवान हैं तेजाजी धाकड़ बाबा, दुर्गा जी, हनुमान जी आदि की भी पूजा करते हैं। सहरिया जनजाति के लोग शीतला माता एवं काली माता की भी पूजा करते हैं। त्यौहारों के रूप में होली, दीवाली, दशहरा, रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, मकर सक्रान्ति, सावनी, अमावस्या तथा तेजाजी दशमी आदि को त्यौहारों के रूप में मनाते हैं।

इस प्रकार सहरिया जनजाति की सामाजिक, आर्थिक संरचना एवं उसके विकास का समाजशास्त्रीय ढंग अपना अनोखा और विचित्र है। यह जनजाति निरंतर अपने विकास में जागरुक एवं रत रहती है।

KEYWORDS:

सहरिया जनजाति, सामाजिक, आर्थिक, संरचना, विकास, अध्ययन, राजस्थान।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th June 2024	30th June 2024

विषय प्रवेश

राजस्थान की सहरिया संस्कृति एक अलग पहचान के साथ अपनी आदिमता के लिये जानी जाती है। जहां एक ओर इस समूह की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन शोधार्थियों का एक उद्देश्य होता है। वहीं दूसरी ओर इसकी जनांकिकी विशेषताओं का अध्ययन सामाजिक, आर्थिक स्थिति को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारको में से एक है। सहरिया संस्कृति की विशिष्टताओं को सही अर्थों में समझने एवं विश्लेषण के लिये नितान्त आवश्यक है कि उस पर सूक्ष्मता के साथ अध्ययन किये जायें। जनांकिकी विशेषताओं के अध्ययन द्वारा ही सहरिया संस्कृति व समाज के वर्तमान सातत्य को जाना जा सकता है। साथ ही उसकी अन्य क्षेत्रों से एवं स्थानीय समाजों से जनांकिकी अभिगमन को जानकर भावी परिस्थिति के सम्बन्ध में एक रूपरेखा बनाई जा सकती है। जिसे तदनुरूप व्याख्यायित कर सुधारात्मक उपायों को लागू किया जा सकता है। वस्तुतः जनजातीय सामाजिक, आर्थिक स्थित्ति के अध्ययन से विकास की भांती दिशा क्या होगी यह सुनिश्चित किया जा सकता है।

सहरिया जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन

सहरिया जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने पर पता चलता है कि, यहाँ पर **मकानों का स्वरूप एवं प्रकाश व्यवस्था** उत्तम तथा जनजातीय क्षेत्रों का भौतिक स्वरूप पठारी है। अतः अधिकांश मकानों के स्वरूप में पत्थरों को बिना चिने या सीमेन्ट, बजरी को जोड़कर दीवारें बनाई गयी हैं। छतें लकडी के लट्ठों पर पतले एवं सामान्य चौड़े पत्थरों को रखकर बनाई गयी हैं। इस जनजातीय क्षेत्र में कुछ गांव छोटे भी हैं। किन्तु अधिकांश गांव की जनसंख्या 500 से अधिक है। सहरिया जनजाति हिन्दुओं के साथ ही रहती है। वर्तमान में यह कह पाना कठिन है कि अन्य जातियां सहरियाओ के सम्पर्क में आईं अथवा सहरिया अन्य जातियों के सम्पर्क में आये हैं। सहरिया गांव की सीमा दर या बस्ती के किसी एक कोने पर बसे हैं। सहरियाओं की बस्ती अथवा मौहल्ले का नाम सहराना होता है। सामान्यतः गांवों में जाति के आधार पर मौहल्ले का नामकरण आज भी पाया जाता है। अधिकांश घरों की दीवार कच्ची मिट्टी की बनी है। किन्तु कुछ पत्थरों से भी निर्मित है। सहरिया अपने घरों की दीवारों को मिट्टी या चूने से रंगते हैं। दरवाजों पर जनजातीय कलाकृतियां बनी होती हीं। यह कलाकृतियां कुछ ही दरवाजों पर पाई गयी हैं।

सहरिया जनजाति के ग्रामीण परिवेशों की स्थिति आज भी कुछ कुछ प्राचीन युग जैसी लगती है। घरों में प्रकाश व्यवस्था के लिये बिजली की व्यवस्था मात्र कुछ ही घरों में है। शहर से दूर गांव में सोलर प्लांट की व्यवस्था की गयी है। किंतु अधिकतर घरों में लालटेन अथवा चिमनी के द्वारा प्रकाश की व्यवस्था की जाती है। प्रशासन के द्वारा निःशुल्क रूप से केवल एक ही कनेक्शन दिया जाता है जिसका भी दुरुपयोग होता है कि, जरूरतमंद व्यक्ति तक सरकारी सहायता प्राप्त ही नहीं हो पाती।

सहरिया जनजाति पर किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि, आधे से अधिक सहरिया जनजाति के मकान अभी भी कच्चे हैं, उनमें केवल कुछ प्रतिशत उत्तरदाताओं के मकान अर्थपक्के तथा 8% के मकान ही पूर्ण रूपेण निर्मित हैं। यहाँ पर जो मकान कच्चे हैं वह मिट्टी से बने हुए हैं तथा उनकी छत लकड़ी के लट्ठों के सहारे चौड़ी लेकिन पतले पत्थरों से बनी हुई

है स्थानीय बोली में इन्हें पाटौर कहा जाता है। यहाँ के अर्धपक्के मकान वह हैं जो पत्थरों की दीवार से बने हुए हैं लेकिन उनकी छत पाटौर ही है तथा पक्के मकान पूर्णरूपेण सीमेंट, पक्की ईंट से बने हुए हैं और तराशे हुए पत्थरों से निर्मित हैं तथा उनकी छतें भी सीमेंट व कंक्रीट से बनी हुई हैं। इस प्रकार सहरिया जनजाति के परिवार सामान्य रूप से कच्चे और अर्द्धपक्के मकानों में ही रहते हैं। कुछ विशिष्ट परिवार ही हैं जो पूर्णरूपेण पक्के मकानों में रहते हैं।

सामान्य व्यक्तियों अथवा परिवारों के पास तक विद्युत की सुविधा शासन के द्वारा दी जाती है। लेकिन लगभग 20% तक सहरिया परिवार आज भी प्रकाश आदि के लिये परंपरागत स्रोत जैसे-चिमनी, लालटेन, घासलेट आदि के प्रयोग पर निर्भर हैं। जबकि शासन के अनुसूचित जनजातियों की बस्तियों में सोलर लाइट की स्थापना भी कराई गई है। इस प्रकार यहाँ की सामाजिक स्थिति सामान्य ही है।

पेयजल की दृष्टि से सहरिया जनजाति का अध्ययन किया जाए तो यहाँ पर गांव में पेयजल की समस्या अत्यधिक गंभीर है। अनुसूचित क्षेत्रों में शुद्ध पानी उपलब्ध कराने के लिये अनेक योजनाएं चलाई गई हैं। लेकिन आज तक फलीभूत नहीं हो पायी हैं। क्योंकि वे सभी योजनाएं स्थानीय राजनीति का शिकार हो जाती हैं और इनका उचित प्रकार से क्रियान्वयन नहीं हो पाता जैसे की कुछ गावों में प्रभावशाली परिवारों तक ही योजनाएं क्रियान्वित होकर रह जाती हैं। वहां हैंडपंप सहराने से लगभग डेढ़ किलोमीटर से अधिक दूरी पर लगाया गया है जहाँ जनसंख्या के मात्र पांच या छह परिवार ही रहते हैं। परंतु वे परिवार प्रभावशाली हैं। इन क्षेत्रों में जनवरी माह में पानी की किल्लत महसूस की जाने लगी थी। इस क्षेत्र में पेयजल परियोजना के पूर्ण होने पर उनका ठीक प्रकार से रखरखाव भी एक समस्या है तथा उचित प्रबंधन की कमी के कारण योजनाएं अपने उद्देश्य को प्राप्त करने से पूर्व ही दम तोड़ देती हैं।

इस प्रकार यहाँ की जनजातियों के मध्य जल संकट का मूल कारण पठारी क्षेत्र का होना है। साथ ही क्षेत्रों में जलापूर्ति के प्रमुख स्रोत हैंडपंप आदि हैं। जो ग्रीष्म काल में जल स्तर गिरने से बंद हो जाते हैं और परिणामस्वरूप संकट पुनः अपनी स्थिति में विकराल रूप धारण कर लेता है। जल संकट का सर्वाधिक दुष्प्रभाव सहरियाओं के ऊपर ही होता है। क्योंकि, वह अपना समय जल की पूर्ति हेतु लगा देता है। और आय हेतु श्रम में कमी आने लगती है तथा वह चारों तरफ से समस्याओं से घिर जाता है।

भौतिक संसाधनों की दृष्टि से सहरिया जनजाति का यह क्षेत्र मुख्यतः विलासिता की वस्तुओं से अछूता है। लेकिन फिर भी संचार माध्यम एवं बाहरी संपर्क के कारण इन जनजातियों के जीवन में भौतिक संसाधनों ने अपनी जगह बना ली है। जिसके कारण आधारभूत आवश्यकताओं से अलग संसाधनों की उपस्थिति सामाजिक प्रतिष्ठा तथा सम्पन्नता का प्रतीक है। इन जनजातियों के घरों में मनोरंजन हेतु रेडियो, टेपरिकार्ड, टेलीविज़न आदि पाए जाते हैं। लेकिन इन संसाधनों से संपन्न परिवार बहुत कम हैं। वहीं सहरिया जनजाति के मध्य यातायात के मुख्य साधनों में दुपहिया वाहन, मोटरसाइकिल आदि एवं इसके अलावा भारी वाहनों में मिनी ट्रक, ट्रैक्टर्स आदि की उपस्थिति पाई जाती है। भारी वाहनों से संपन्न परिवारों की संख्या अत्यधिक न्यून है। वस्तुतः दोनों ही वर्गों से सम्पन्न परिवारों की संख्या बहुत कम है। सामान्य रूप से इस दृष्टिकोण से यह जनजाति दूसरों पर ही आश्रित हैं।

इस प्रकार यह तो निश्चित है कि, सहरिया जनजाति में केवल कुछ एक परिवार ही ऐसे हैं जो सुख सुविधाओं के उपकरणों से सम्पन्न हैं। जिन वस्तुओं की संपन्नता उन परिवारों के मध्य देखी जाती है वह आज के दौर में अत्यधिक प्राचीन एवं सस्ते आते हैं जिन्हें वहाँ की जनजातियों ने जंगलोत्पाद द्वारा प्राप्त एकमुश्त राशि अथवा बाहर जाकर की गई अपनी मजदूरी से प्राप्त किया है।

पशुधन की दृष्टि से ग्राम्य परिवेश में कृषि एवं पशुधन साथ-साथ चलने वाला व्यवसाय है। यद्यपि सभी कृषक पशुपालन व्यवसायिक स्तर पर नहीं करते। सहरिया जनजाति के कुछ परिवार ऐसे हैं जो पशुपालन को व्यावसायिक रूप से नहीं कर पाते। उनके पास पशुओं की संख्या कम है। साथ ही ग्रामीण स्तर पर उत्पाद घर के प्रयोग में ही खप जाता है अतः पशुपालन में जहाँ एक ओर आर्थिक अर्जन होता है वहीं दूसरी ओर पशुओं से खेती के कार्य में भी मदद मिलती है। सामान्य रूप से इस जनजाति के परिवारों के पास गाय, बैल, भैंस, बकरे, बकरी, भेड़ आदि पाई जाती हैं। लेकिन ऐसे परिवार आधे से भी बहुत कम हैं। जिनमें पशुपालन के लिए पशुओं की संपन्नता देखी जाती है। कुछ परिवार ऐसे हैं जो एक से अधिक पशुओं का पालन करते हैं। लेकिन लगभग 70% परिवार ऐसे हैं जो पशुपालन का कार्य नहीं करते। इन परिवारों में कुछ परिवार ऐसे हैं जो केवल गाय पालते हैं। कुछ ऐसे हैं जो बैल का पालन कर रहे हैं और बैल उनकी खेती के काम आते हैं। कुछ परिवारों में भैंसें भी पाली जाती हैं। कुछ परिवार भेड़, बकरी का पालन करते हैं। अधिकतर पशुपालक परिवार शासकीय योजनाओं के लाभार्थी हैं। अतः दूध उत्पादन हेतु पशुओं की संख्या एवं प्रजाति सहरियाओं के पास श्रेष्ठ नहीं। उनका व्यावसायिक स्वरूप में धनार्जन में उसका हिस्सा कम ही है।

कृषि भूमि की दृष्टि से प्रत्येक परिवार की जीविका का साधन इन जनजातीय क्षेत्रों में मुख्य रूप से कृषि ही है। यहां भूमि को अचल संपत्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है। भले ही उसका उपयोग जीविका अर्जन के लिए किया जा रहा है। वर्तमान में अल्पवर्षा, अवर्षा के कारण कृषि भूमि की उपस्थिति आजीविका का कोई साधन उपलब्ध नहीं करा पा रही है। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि, इस जनजाति के लोग 50% से अधिक ऐसे हैं जो भूमिहीन हैं तथा 50% से कम व्यक्तियों के पास भूमि है। यद्यपि पट्टाधारी कुल कृषि भूमि धारकों की संख्या में वास्तविक कृषि भूमि धारकों की संख्या बहुत कम है। कुछ लोग की भूमि उनके पास नहीं होती अन्य व्यक्ति के कब्जे में होती है। जिसके कारण वह अनेक प्रकार से चिंताग्रस्त हैं।

यदि शासकीय नियमानुसार देखा जाए तो अनुसूचित जनजाति की संपत्ति को कोई अन्य जाति का व्यक्ति खरीद ही नहीं सकता। यही कारण है कि जरूरतमंद व्यक्तियों की अधिकाधिक जमीन को कम से कम कीमत में अवैधानिक रूप से अपने कब्जे में कर लिया जाता है। और सहरियाओं के पास इस दशा को स्वीकार करने के अलावा कोई और विकल्प नहीं शेष रह जाता। जिसके कारण सहरिया जनजाति के लोग अत्यधिक कष्ट उठाते हैं। ये लोग स्वाभाविक रूप से अत्यधिक खर्चीले होते हैं। विवाह आदि के उत्सव पर आय से अधिक खर्च करने की आदत होती है। जिसके कारण इन्हें ऋण लेना पड़ता है। और ऋण लेने के कारण ही इनकी जमीन कब्जे में चली जाती है। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यधिक दयनीय होती चली जाती है और यह शोषित होते चले जाते हैं।

वार्षिक आय की दृष्टि से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगो की वार्षिक आय की गणना वर्ष भर के लिये किये गये कार्य के उत्पादक मूल्य के आधार पर की जाती है। प्रायः कृषि उत्पादन, पशुओं से होने वाली आय, मजदूरी एवं शासकीय, अशासकीय सेवाओं से प्राप्त आय वर्ष में तरल मुद्रा के रूप में देखी जाती है। सहरियाओ की जनजातियों के क्षेत्र में अधिकांश लोगों की आमदनी खेती, कुशल अकुशल मजदूरी, पशुपालन, वनोपज आदि पर आधारित है।

जहां सिंचाई की समुचित व्यवस्था नहीं है। अतः कुछ एक कृषकों को छोडकर शेष कृषकों का कृषि उत्पादन घरेलू प्रयोग को भी बहुत मुश्किल से पूरा कर पाता है। सहरिया जनजाति के व्यवसाय में विशेषीकरण नहीं पाया जाता है कि अमुक परिवार किसी विशेष व्यवसाय में ही संलग्न है। बल्कि सहरिया कार्य की उपलब्धता और स्वयं की आवश्यकता के अनुरूष विभिन्न कार्यों में संलग्न हो जाते है। वे वनोपज संग्रहण का कार्य करते है किसी अन्य प्रकार की मजदूरी जैसे सडक एवं भवन निर्माण का कार्य भी करते है।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकांश लोग उस समय बेरोजगार रहते हैं जब वनोपज संग्रहण करना होता है। यह भी देखा गया है कि वर्षा ना होने के कारण जंगल उत्पादन में भी कमी आयी है। जिससे अधिकतर सहरिया जनजाति के लोग बेरोजगार घर पर ही बैठे इस है। ऐसे में सर्वाधिक प्रतिशत सहरिया परिवार में 5000 से 10,000 रुपए वार्षिक आय के समूह वालों का है जबकि सहरियाओं की मात्रा में 1% परिवार ही ₹1000 अथवा इससे अधिक वार्षिक आय से युक्त हैं। सहरिया परिवारों की औसत आए निकाले जाने पर ज्ञात होता है कि, इनकी औसत आय लगभग ₹7812 वार्षिक की कुछ विद्वानों ने सहरियाओं की आक्रमण्यता को भी दर्शाया है। अधिकांश लोगों को काम नहीं मिलता है स्थानीय लोग उनसे काम नहीं कराते हैं और इसी कारण सहरियाओं का ठीक से काम ना करने का मन होता है। लेकिन यह सब सत्य ही है ऐसा नहीं। इस जनजातीय परिवारों के सदस्य संख्या और आय में धनात्मक सहसंबंध है अर्थात बड़े परिवार अधिक आय प्राप्त करते हैं अध्ययन क्षेत्र में भी अधिक कार्यशील सदस्य संख्या वाले परिवार अधिक आय प्राप्त करते हैं किंतु प्रति व्यक्ति आय ऐसे परिवारों में कम पाई जाती है जहाँ शहरों में प्रति व्यक्ति आय कम है जिनके लिए मात्र भोजन की व्यवस्था करना भी एक कठिन कार्य है। सहरिया जनजाति वाले लोग वर्ष और अधिक कठिनाई का सामना करते हैं क्योंकि जब इनके आय के स्रोत स्वयं निर्भर नहीं है बल्कि अन्य समुदायों के ऊपर निर्भर है।

आर्थिक विकास की दृष्टि से सहरिया जनजाति

भारत की जनजातियां आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करती है। सामान्यतः जनजातियां अर्थव्यवस्था सर्वत्र मिश्रित प्रकार की पायी जाती है। जनजातीय

आर्थिकी में व्यवसायो का विशिष्टीकरण नहीं पाया जाता है। अपितु एक ही जनजाति कई प्रकार के व्यवसायों में संलग्न पायी जाती है। जब कोई जनजाति कोई विशिष्ट व्यवसाय करने लग जाती है। तब वह जातियों जैसा व्यवहार करने लग जाती है।

भारतीय जनजातियों के आर्थिक जीवन को न तो व्यवस्थित कहा जा सकता है और न मात्र खाद्य संकलनकर्ताओं की संपोगिक क्रियायें ही माना जा सकता है । एक जनजाति द्वारा अपने संभरण के लिये शिकार के साथ शहद इकट्ठा करने लकडी कटाई के साथ शिकार करने, स्थानान्तरित कृषि के साथ पशुपालन करने जैसे व्यवसायिक संयोग स्वयं यह दर्शाता है कि निम्न संस्कृतियों का आर्थिक रूप कितना जटिल है।

सहरिया जनजाति लम्बे अरसे से अन्य समुदायों के साथ इस क्षेत्र में रह रही है। उसकी आर्थिक क्रियाओं में बदलाव आया है और वर्तमान आर्थिक परिवर्तन उसकी परम्परागत जीवन शैली में परिवर्तन के साथ ही विकास की दिशा को भी निर्धारित कर रहा है। उसकी आर्थिकी में व्यवसायिक सदस्यों की भागीदारी का स्तर एवं निर्भरता के स्रोतों का विश्लेषण और विवेचन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि सहरिया जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति सामान्य है। उन स्थलों पर केवल कुछ ही परिवार ऐसे हैं जो सामाजिक और आर्थिक स्थिति के रूप में उन्नत हैं। ऐसे परिवारों का प्रतिशत बहुत कम है। अन्यथा सभी परिवार मध्यम स्थिति से नीचे ही हैं उनका विकास उतना अधिक नहीं है जितना वर्तमान समय में होना अपेक्षित है। सभी व्यक्ति अपने विकास के लिए निरंतर कार्यों में जुटे रहते हैं। लेकिन वह हर रूप में मजदूरी आदि समस्त कार्यों में संलग्न रहते हुए अपनी आजीविका चलाने के लिए निरत रहते हैं। आज भी वहाँ पर विकास और संसाधनों की कमी है। जिसे पूरा तभी किया जा सकता है जब सरकार अपना संपूर्ण प्रयास उनके लिए लगा दें।

REFERENCES

1. शर्मा डॉ. ब्रहमदेव, आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2015.

2. शरण, आर, भारतीय सभ्यता एवं भारतीय संस्कृति का इतिहास, राधा पब्लिशर्स नई दिल्ली 2002.

3. दिनकर सिंह रामधारी, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010.

4. महाजन डॉ. धर्मवीर, महाजन डॉ. कमलेश, नातेदार, विवाह एवं परिवार का समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन नई दिल्ली 2014.

5. महाजन डॉ. धर्मवीर, महाजन डॉ. कमलेश, अपराध एवं समाज, विवेक प्रकाशन नई दिल्ली 2013.

6. मध्यप्रदेश शासन, आदिम जातिं कल्याण, विभाग, प्रशासकीय प्रतिवेदन, 2012-13, 2013-14.

7. गुप्ता डॉ. मंजु, "जनजातियों का सामाजिक आर्थिक उत्थान", अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2006.

8. सिंह, डॉ. सुरेन्द्र : सामाजिक सर्वेक्षण हिन्दी ग्रंथ अकादमी उ.प्र. 1982.

9. तोमर, आर.बी.एम. : सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी आगरा 1984.

10. मजूमदार, नरेन्द्रदत्त, आदिवासियों की समस्या आदिवासी दिल्ली, प्रकाशन विभाग, संस्करण 2009.